अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सांस्कृतिक विकास

डॉ० पूनम भूषण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र
राज०स्ना०महा० अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग

सारांश

मानव में ही वह अद्भुत शक्ति एवं क्षमता मौजूद हैं कि वह संस्कृति का निर्माता कहलाने का अधिकारी है । ये क्षमताएं मानव में शारीरिक बनावट के कारण है। ''संस्कृति'' शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है। संस्कृत और संस्कृति दोनों शब्द संस्कार से बने है। संस्कार का अर्थ है कुछ कृत्यों की पूर्ति करना। सांस्कृतिक विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। हमारे पूर्वजों ने बहुत सी बातें अपने पुरखों से सीखी है। हमने भी अपने पूर्वजों से बहुत कुछ सीखा, जैसे समय बीतता है हम उनसे नये विचार, नई भावनाएं जोड़ते चले जाते है और इसी प्रकार जो हम उपयोगी नही समझते उसे छोड़ते जाते है। अविष्कार और प्रसार द्वारा संस्कृतियों का रूप बदलता है, अन्य संस्कृतियों के तत्व कई कारणों से ग्रहण किये जाते है। कुछ तो दबाव के कारण अपनाएं जाते है, कुछ नवीनता के लिए। कुछ सुविधा और लाभ के लिये, कुछ नवीन तत्व प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये अपनायें जाते है।

मानव में शारीरिक व मानसिक शक्ति की अद्भूत क्षमता होती हैं। इसलिये वह संस्कृति का निर्माता कहलाने का अधिकारी है। संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है, संस्कृत और संस्कृति दोनो ही शब्द संस्कार से बने है। संस्कार का अर्थ है कुछ कृत्यो की पूर्ति करना। संस्कृति जीवन की विधि है जो भोजन खाते है, जो कपड़े पहनते है, जो भाषा बोलते है, और जिस भगवान की पूजा करते है, ये सभी संस्कृति के पक्ष है। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, दर्शन, धर्म, और विज्ञान सभी संस्कृति के पक्ष है। संस्कृति में रीति-रिवाज, परम्पराएं, पर्व, जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित है।

मजूमदार एवं मदान लोगो के जीने के ढंग को ही संस्कृति मानते है। टायलर के अनुसार ''संस्कृति वह समग्र जटिलता है। ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून तथा और ऐसी

ही अन्य क्षमताओं एवं आदतो का समावेश है जो मनुष्य समाज का एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है''।

सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् ये तीन शाश्वत मूल है जो संस्कृति से निकट जुड़े है, यह संस्कृति ही है जो हमें दर्शन और धर्म के निकट लाती है। हमारे जीवन में कलाओं के माध्यम से सौन्दर्य प्रदान करती है। संस्कृति ही हमें नैतिक मानव बनाती है और दूसरे मानवों के निकट सम्पर्क मे लाती है और इसी के साथ प्रेम, सहिष्णुता और शान्ति का पाठ पढ़ाती है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सांस्कृतिक विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। हमारे पूर्वजों ने बहुत सी बाते अपने पुरखों से सीखी है। समय के साथ उन्होंने अपने अनुभवो मे बृद्धि की जो अनावश्यक था उसे छोड़ दिया। हमने भी अपने पूर्वजो से बहुत कुछ सीखा, जैसे समय बीतता है हम नए विचार नयी भावनाओं को जोड़ते चले जाते है और इसी प्रकार जो हम उपयोगी नही समझते उसे छोड़ते जाते है।

भारत मे सांस्कृतिक विकास १३वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो मे दिल्ली सल्तनत का उदय देश के सांस्कृतिक विकास के नये काल का सूत्रकाल माना जा सकता है। भारतीय समाज के साथ तुर्को का सम्बन्ध एक समृद्ध विकास की लम्बी कड़ी में परिवर्तित हुआ, यह प्रक्रिया लम्बी और उतार चढ़ाव से भरी हुयी थी।

अविष्कार और प्रसार द्वारा संस्कृतियों का रूप बदलता है अन्य संस्कृतियों के तत्व कई कारणो से ग्रहण किए जाते है। कुछ तो दबाब के कारण अपनाएं जाते है, कुछ नवीनता के लिए, कुछ सुविधा के लिए और कुछ लाभ के लिए, कुछ नवीन तत्व प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनाएं जाते है।

संस्कृति के दो भिन्न उप विभाग है। भौतिक और अभौतिक संस्कृतिक उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बन्धित है जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बन्ध विचारो आदेशो भावनाओं और विश्वासो से है। संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश मे बदलती रहती है। इसका विकास एक स्थानीय, क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय संदर्भो मे विद्यमान ऐतिहासिक पर आधारित है।

संस्कृति की विशेषताएं

- संस्कृति केवल मनुष्य समाज में ही पायी जाती है। मानव में कुछ शारीरिक एवं मानसिक विशेषताएं है। जिसके कारण वह संस्कृति को निर्मित एवं विकसित कर रहा है, और अपने विकसित मस्तिष्क के कारण ही मानव नये-नये अविष्कार करता है और उन्हें मानव जाति के अनुभवो में संजोता है।
- हॉवल कहते है कि संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है। संस्कृति मनुष्य को अपने माता-पिता द्वारा उसी प्रकार वंशानुक्रण में प्राप्त नही होती, जिस प्रकार से शरीर रचना प्राप्त होती है।
- संस्कृति चूंकि सीखी जा सकती है इसलिए नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के द्वारा संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करती है।
- एक समाज की भौगोलिक एवं परिस्थितियां एक दूसरे से भिन्न होती है इसलिए प्रत्येक समाज की एक विशिष्ट संस्कृति होती है।
- संस्कृति किसी व्यक्ति की नही होती बल्कि इसमे समाजिक गुण निहित होता है।
- एक समूह के लिए अपनी संस्कृति आदर्श होती है। वह उसी के अनुसार अपने विचारों को ढालती है।
- संस्कृति मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

- संस्कृति में समय, स्थान, समाज एवं परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन करने की क्षमता होती है।
- संस्कृति में अनुकूलन एवं संगठन बनाये रखने का गुण होता है।
- संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। नैतिकता बनाये रखती है।
- संस्कृति अधिवैयक्तिक एवं अधिसावयवी है।

भारत में यातयात के साधनो एवं सड़को का तीव्र विकास हुआ है। संचार के साधन में वृद्धि हुयी है, नवीन उद्योगो की स्थापना हुयी है, कृषि में उन्नत बीजों, खादो एवं यंत्रो का प्रयोग होने लगा है। ये सभी संस्कृति के भौतिक पक्ष में परिवर्तन है, किन्तु दूसरी ओर भारत में धर्म, दर्शन, प्रथाओ विश्वासों रीति -रिवाजो संस्थाओ आदि में गति से परिवर्तन नही हुये है। अतः अभौतिक संस्कृति पिछड़ गयी है। महिलाओं के विचारों तथा स्थिति में भी आधुनिक साधनों तकनीकियों से परिवर्तन आया है। स्त्री-पुरूष में समानता के विचार पुस्तको में ही अच्छे लगते है दैनिक जीवन के लिए उसका पति ही परमेश्वर है।

उत्पादन के लिए नवीन मशीनों का उपयोग किया जाता है किन्तु दीपावली में मशीनों की भी लक्ष्मी के रूप में पूजा की जाती है। नयी गाड़ियां खरीदने पर स्वास्तिक का चिन्ह यातायात के लिए बस, रेल, जहाज का प्रयोग करते है। किन्तु आज भी जाति प्रथा, छुआछूत से हम मुक्त नही हो पाये है।आज विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर रहे है, किन्तु परीक्षा में पास होने के लिए व्रत, मन्दिर जाते है। बिल्ली का रास्ता काटना, छींक मारना शुभ-अशुभ पर अभी भी विश्वास किया जाता है। भौतिक संस्कृति में नवीनता को अपनाना तो सरल है। किन्तु रीति रिवाज, विचारों, विश्वासो मूल्यो मनोवृतियो तथा प्रथाओं में परिवर्तन करना कठिन है।

सांस्कृतिक विकास का मानव जीवन पर प्रभाव -

- संस्कृति मानव की आवश्यकताओ की पूर्ति करती है।
- संस्कृति ही व्यक्ति में नैतिकता एवं उचित और अनुचित के भाव उत्पन्न करती है।
- संस्कृति मानव व्यवहारो मे एक रूपता लाती है।
- संस्कृति का पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण होता है, इसलिए अनुभव व कार्यकुशलता को बढ़ाती है।
- संस्कृति समस्याओं का सामाधान करती है।
- संस्कृति व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करती है।
- संस्कृति मानव की आदतों का निर्धारण करती है।
- संस्कृति प्रास्थिति एवं भूमिका का निर्धारण करती है।
- संस्कृति सामाजिक नियन्त्रण बनाये रखने में सहायक है।
- संस्कृति मानव को मूल्य व आदर्श प्रदान करती है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आज शिक्षा, वैज्ञानिकी तकनीकि, औधौगीकीकरण, नगरीकरण, आदि के कारण भारतीय संस्कृति में परिवर्तन हो रहा है भौतिक संस्कृति में कई परिवर्तन आये है, लेकिन अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन करना कठिन होता है। आधुनिकता के कारण मानव की सोचने-विचारने के तरीकों में परिवर्तन आया हैं। संस्कृति के विकास से देश समाज का विकास होता हैं। संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण आर्थिक जीवन औद्योगिक विकास, राजनीतिक संगठनो के विकास तथा सामाजीकरण को प्रभावित करती है।

संदर्भ सूची

गुप्ता एम० एल० एवं डी० डी० शर्मा, २००४ समाजशास्त्र, आगरा : साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, पृ० सं० २६६-२६०।

मुकर्जी रविन्द्रनाथ, भरत अग्रवाल, २०१६ समाजशास्त्र, आगरा : साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, पृ० सं० ३७-३८।

m. bharatdiscovery.org.

https://hi.m.wikipedia.org.

https;//www.scotbuzz.org.bandry, November, 15: 2018